युवा जीवन

मई 2022

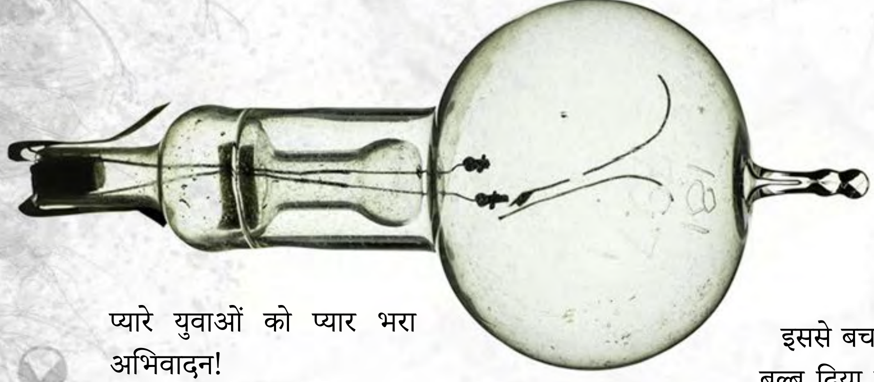

प्रस्तावना

प्यारे युवाओं को प्यार भरा अभिवादन!

थॉमस अल्वा एडिसन ने अंधेरे में रहते लोगों के लिए बल्ब की खोज करने के लिए अपना पूरा प्रयास किया। अपने शोध के दौरान, उन्होंने 1000 बार कड़ी मेहनत की। उन्होंने अपनी दुर्लभ खोज को अपने सहयोगियों के साथ साझा किया। इसलिए, उन्होंने अपने एक सहयोगी को बुलाया और उससे कहा, "बल्ब को पकड़ो ताकि मैं बल्ब जलाकर तुम्हें दिखाऊं"। लेकिन जिसके हाथ में बल्ब था वह बहुत घबराया हुआ था क्योंकि यह एडिसन का एक बहुत बड़ा आविष्कार होने के कारण वह सचमुच डर गया था कि कहीं गलती से उससे बल्ब न गिर जाए। क्योंकि वह व्यक्ति अपने भय के चरम पर था, उसने बल्ब को गिरा दिया और उसे तोड़ दिया। इसे देखकर सभी को बड़ा झटका लगा। सभी को लगा कि उसने बहुत बड़ी गलती की है और उसे वहाँ लैब में नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है। लेकिन एडिसन बिना कुछ बोले अपने कमरे में चले गए।

दो दिन बाद उसने उसी व्यक्ति को बुलाया और कहा कि इस बार ठीक से पकड़ो, मैं बल्ब जलाऊंगा। लैब में मौजूद सभी लोग दंग रह गए।

जिस व्यक्ति ने उसे तोड़ा, उसी को आप फिर से बल्ब कैसे दे सकते हैं, सभी ने एडिसन से पूछा? आपका पूरा आविष्कार व्यर्थ हो सकता था। एडिसन ने उत्तर दिया, "इस बल्ब का पुन: आविष्कार करने में सिर्फ एक दिन लगा। यदि मैंने इसे तोड़ा, तो मैं सिर्फ एक दिन में हजारों बल्बों का पुन: आविष्कार कर सकता हूं। लेकिन यदि वह व्यक्ति अपना विश्वास खो देता है, उसे पुनः प्राप्त करना बहुत कठिन है।

इससे बचने के लिए मैंने फिर से उसी व्यक्ति को बल्ब दिया ताकि उसका विश्वास अभी भी जीवित रहे।

कई बार हमें खुद पर विश्वास नहीं होता है, लेकिन परमेश्वर को हम पर बहुत विश्वास है। हमारी कई असफलताओं, बार-बार उनका इनकार करने और पीछे हटने के बावजूद, यीशु हमारे पास आए, हमें बहाल किया, हमें दृढ़ किया, हमें मजबूत और स्थिर बनाया।

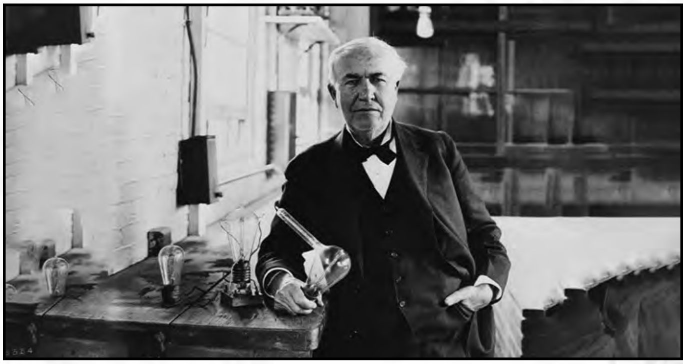

प्रिय युवाओं, परमेश्वर के आप पर जो भरोसा है उसे व्यर्थ न गवाएं।

परमेश्वर ने आपके लिए जो योजना बनाई है उसे वह पूरा करेंगे। यह मत भूलें कि आप उसकी नज़र में एक नायक हैं! दृढ़ बने, आगे बढ़े, अपने लिए उनकी महान योजनाओं को पूरा करने के लिए तत्पर रहें।

मसीह के कार्य में,

अविनाश

आशा का परमेश्वर

मेरे प्रिय युवा भाइयों व बहनों! इस आशा के साथ कि आप सभी जीवन में अच्छा कर रहे हैं, मैं प्रार्थना कर रही हूं कि आपकी प्रार्थनाओं एवं मनन के माध्यम से आप परमेश्वर के करीब बढ़ रहे हैं। आएं इस महीने के लेख से शुरू करते हैं। दोस्तों, हाल के वर्षों में, उन सभी बातों के बारे में सोचें, जिनसे हम गुजरे हैं। कोरोना नाम की महामारी, कितनी मौतों का हमने सामना किया, उसकी वजह से अपनी नौकरी गंवाने वाले लोग, आर्थिक मंदी और क्या नहीं। मानो बस एक महामारी ही काफी नहीं, रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध जिसके परिणामस्वरूप अप्राकृतिक महँगाई, बढ़ती कीमतें आदि हमारे भविष्य के बारे में एक बड़ा सवाल उठा रही हैं। उदाहरण के लिए, इतने सारे छात्र जो अपनी पढ़ाई के लिए यूक्रेन में थे, घर लौट आए हैं। कोई नहीं जानता कि उनका भविष्य क्या होने वाला है और इस तरह के हालात की कीमत हमारी उम्मीदों को चुकानी पड़ती हैं।

लेकिन, आनन्दित हो, प्रिय भाइयों और बहनों! आशा के परमेश्वर के रूप में, यीशु हमारे साथ हैं। हमें डरने की जरूरत नहीं है। बहुत से लोग जब कष्ट सहते हैं तो परमेश्वर से निराश हो जाते हैं। आएं हम उनमें से एक न हों। क्योंकि, जब हम परमेश्वर के मार्गों पर संदेह करते हैं, तो यह दर्शाता है कि हम वास्तव में परमेश्वर के मार्गों को नहीं समझते हैं। परमेश्वर ने कभी नहीं कहा कि वह हमें एक आसान जीवन प्रदान करेंगे, इसके बजाय, उनका वादा है कि "मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है" यूहन्ना 16:33, "चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तो भी हानि से न डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।" भजन संहिता 23:4

जी हाँ दोस्तों, जब आप थोड़ा सोचेंगे तो समझ पाएंगे कि यदि हमारा जीवन परमेश्वर के लिए न होता तो क्या होता। हम आशा कहाँ से लाएँ, केवल पृथ्वी पर ही नहीं, वरन अनंत काल के लिए हमारी क्या आशा होगी! जैसा कि कुलुस्सियों 1:27 में कहा गया है, "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है", परमेश्वर हमें एक ऐसी आशा देते हैं जो मृत्यु की जगह ले लेती है। "यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं", बाइबल कहती है।

जब आप भजन संहिता में राजा दाऊद की कविताओं को पढ़ते हैं तो आप उसे आशाहीनता से रोता हुआ देख सकते हैं जैसे, मेरे शत्रु मुझे घेर रहे हैं, मेरा दुःख मेरा बिछौना बन गया है। लेकिन यदि आप ध्यान दें, वह प्रत्येक अध्याय को आशा व उसके पूरे होने से भरी एक टिप्पणी से समाप्त करता है। ऐसा इसलिए क्योंकि, सभी क्लेशों के बजाय, दाऊद का विश्वास था कि "परमेश्वर मेरे साथ हैं और मैं परमेश्वर के साथ हूं"।

तो, मेरे प्रियों, पता नहीं आप इस समय किस तरह की कठिनाई से गुज़र रहे हैं; लेकिन परमेश्वर जानते हैं। वह एक विश्वासयोग्य परमेश्वर हैं। उन पर अपना भरोसा रखें। वह सही समय पर आपकी मदद करेंगे।

"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों 8:28)। यह वचन परमेश्वर पर आपके विश्वास को कई गुणा बढ़ाए। आमीन।

प्रेम के लिए लालायित!

प्रभु ने एक ऐसी लड़की को, जिसने छोटी उम्र में अपने पिता को खो दिया और जिसे यीशु से घृणा थी, उस पर अपना प्रेम बरसा कर उसे अपने करीब लाकर, एक सुसमाचार प्रचारक में जीवन बदल दिया है। वह हम से इस परिवर्तन का अनुभव बाँट रहीं हैं। आइये उससे सुने।

क्या आप अपने बचपन के बारे में साझा कर सकती हैं?

मेरा जन्म चेन्नई में श्री कन्नन और श्रीमती नागम्मा की सबसे बड़ी बेटी के रूप में हुआ। मेरी एक छोटी बहन है। मेरा जन्म व पालन-पोषण एक पारंपरिक मसीही परिवार में हुआ, लेकिन मैंने उद्धार नहीं पाया था। जब मैं अपनी तीसरी कक्षा में थी तब मेरे पिता का निधन हो गया और इसने मुझे बहुत प्रभावित किया। जब मेरी माँ चर्च जाती, तो वह मुझे साथ आने के लिए बुलाया करती थी। तो मैं किसी दबाव से नहीं बल्कि कर्तव्य के कारण चर्च जाती, आखिरी बेंच पर बैठती, अपनी भेंट डालती, और घर लौट जाती थी। मेरे और यीशु के बीच कोई संबंध नहीं था।

ठीक है। तो, आप वहाँ बिना किसी भागीदारी के चर्च जाती थीं। क्या आप अपनी स्कूली शिक्षा के बारे में साझा कर सकती हैं?

मैं अच्छी पढ़ाई करती थी और हमेशा अव्वल पाँच में रहती थी। केवल स्कूल में ही मैं आज्ञाकारी और कुशल रहती, वरना मैं बहुत गर्म स्वभाव की हूँ। मेरे पिताजी के निधन की निराशा के कारण, मैं अपने दोस्तों के साथ घुलना-मिलना पसंद नहीं करती थी। मैं हर चीज की शिकायत करती रहती। जब मैं स्कूल जाती, तो मैं अन्य बच्चों को अपने पिता के साथ आते देखती और एक पिता के लिए तरसती रहती। हमारे घर में पानी निकालना थोड़ा मुश्किल है। इसलिए मैं और मेरी बहन हमारे घर पानी लेकर आते हैं। लेकिन दूसरे घरों में उनके पिता ये मेहनत का काम करते हैं। यह देखना मुझे दुखी महसूस कराता था। मुझे फिल्में देखने का ज्यादा शौक था। जब तक मैं 15 साल की हुई, मैंने अपना जीवन इसी तरह बिताया। मैं निराश थी और यह प्रश्न पूछती रहती थी, "मुझे चर्च क्यों जाना चाहिए? परमेश्वर ने तो मेरे पिताजी को ले लिया"। मेरे पिता की कमी ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

ठीक है। आप पढ़ाई में होशियार थीं, लेकिन अपने पिता की मृत्यु के कारण आप यीशु पर क्रोधित थीं। तो, आपने कब से प्रभु को खोजना शुरू किया?

जब मैं दसवीं में पढ़ रही थी। हमारे शहर की कुछ बहनों ने बच्चों के लिए सप्ताह में एक बार संगति करने का फैसला किया। मुझे पता था कि वे सप्ताह में एक ही बार आएंगी और इसलिए मैं कोई बहाना बना देती जैसे मैं ट्यूशन के लिए जा रही हूं या परीक्षा के लिए पढ़ रही हूं या रसोई में माँ की मदद कर रही हूँ आदि और इसलिए संगति में नहीं आ सकती। एक दिन वे जल्दी आ गईं और मुझे मजबूर करने लगी कि मैं संगति के लिए आऊं और कोई बहाना न दूं। जब मैं वहाँ गई, तो उन्होंने उनमें से 12 को एक घेरे में बैठाया और गीत गाए और प्रार्थना की। कोई फर्क नहीं पड़ा कि उन्होंने क्या कहा, मैंने बस इतना कहा कि मुझे नहीं पता और चुपचाप बैठ गई। मैं ताली बजाने से भी झिझक रही थी। मेरे मुँह से आमीन का एक शब्द भी नहीं निकला। जब उन्होंने मुझे प्रार्थना करते समय अपनी आँखें बंद करने के लिए कहा, तो मैंने ऐसा भी नहीं किया, बस अपना सिर झुकाए बैठी रही।

इसी तरह कई दिन बीत गए। एक दिन उन्होंने संगति में हमें आँखें बंद करने और प्रार्थना करने के लिए कहा। लेकिन मैंने प्रार्थना नहीं की और चुपचाप सिर झुकाकर बैठ गई। जैसे ही सभी लोग वहाँ प्रार्थना करने लगे, मुझे अपने हृदय में कुछ बोझ लगने लगा

और मेरी आँखों में आँसू भर आए और मैं रोने लगी। मैं हैरान हो रही थी कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है। मैंने सवाल किया, “यदि आप परमेश्वर हो तो मेरे पिता को क्यों ले गए? हर कोई छोटी उम्र से ही अपने पिता के साथ इतना मज़ा कर रहा है। आपने मेरे पिता को ही क्यों लिया?” फिर मैंने यह कहते हुए एक आवाज सुनी, “मैं तुम्हारा पिता हूँ”। उस आवाज ने मुझ पर गहरा असर डाला। प्रार्थना के बाद यद्यपि मैं घर चली गई, वह बोझ मुझ से दूर नहीं हुआ। वो शब्द मुझे अंदर से दबा रहे थे।

बहुत अच्छा, तो किसी तरह आप संगति में जाने लगीं। आपने यीशु मसीह के प्रेम का स्वाद कैसे चखा?

तब से, मैं हर हफ्ते संगति में जाने लगी। यदि कोई बाइबल से कुछ बताता तो मैं उन्हें पूरे ध्यान से सुना करती। बाद में, क्योंकि मुझे बाइबल पढ़ने की रुचि हुई, मैं बिना किसी की जानकारी के अपनी चाची के घर बाइबल पढ़ने लगी।

मैं अपनी चाची की बाइबल आखिर कब तक उपयोग कर पाऊंगी यह सोचकर मैंने स्कूल जाने के समय मुझे मिलने वाले 2 रुपयों को जोड़ना शुरु कर दिया और अपने लिए एक नई बाइबल खरीद ली। क्योंकि अब मेरे पास मेरी बाइबल थी और मुझे यह पूरी पढ़नी थी इसलिए मैंने इसे पूरा पढ़ लिया। परमेश्वर का वचन बहुत शांतिदायक था। मैं परमेश्वर के प्रेम को महसूस करना चाहती थी और जब मैंने परमेश्वर का वचन पढ़ा, तो मैं इसे अनुभव कर पाई।

ठीक है। तो आपने परमेश्वर के प्रेम को महसूस किया और उन्हें स्वीकार किया। उसके पश्चात आपका परमेश्वर से संबंध कैसा रहा?

मैं यह न जानती थी कि मुझे परमेश्वर के प्रेम के विषय में दूसरों को बताना है। हर रोज़, नींद से उठने के बाद, मैं वचन पढ़ती, प्रार्थना करती, और स्कूल जाती थी। स्कूल में खाली समय के दौरान, मैं पढ़े हुए वचन के दो पदों को याद किया करती और इन्हें अपनी दो या तीन सहेलियों से सांझा करती थी। मैंने अपनी स्कूल की पढ़ाई इसी प्रकार पूरी की। उसके बाद मैं महाविद्यालय में जुड़ गई, तो एक साल तक मैंने कुछ ज्यादा नहीं किया। एक साल बाद, मैंने एक प्रार्थना समूह शुरू करना चाहा और इसलिए मैंने अपने कॉलेज की सहेलियों को आमंत्रित किया। उनमें से 10 सहेलियाँ आ गईं। ऐसी लड़कियाँ भी थीं जो यीशु को भी नहीं जानती थीं। हम सभी ने एक साथ जुड़कर लगातार प्रार्थना की। तभी कोरोना का पहला लॉकडाउन हो गया। उस समय भी हम फोन पर कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से प्रार्थना करती रहीं। जैसा कि यह जारी रहा, टेलीविजन कार्यक्रम “वंगा जेबीक्कलाम” में बताया गया कि एक युवा इग्नाइटर्स रिवाइवल कैंप है। मैंने इसमें अपना पंजीकरण किया और इसमें भाग लिया और दूसरों को सुसमाचार कैसे साझा किया जाए, इस विषय में बहुत सी बातें सीखीं।

बहुत अच्छा। एक समय परमेश्वर से घृणा करने वाली एक लड़की होने पर भी, आपने उसी परमेश्वर के बारे में दूसरों के साथ साझा करना सीखा, लेकिन क्या आपने दूसरों के साथ यह साझा करना शुरू किया?

उस शिविर (कैंप) के बाद, परमेश्वर ने अपनी कृपया से मुझे एक नौकरी दी। मुझे एक नौकरी मिल गई जिसमें पहले मुझे एक कोविड टेस्ट करवाना था। हर कोई मुझे उस नौकरी के लिए भेजने से डरता था। जब मेरी माँ ने कहा कि यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम नौकरी के लिए जाओ तब मैंने प्रार्थना करना शुरू किया। परमेश्वर ने भजन संहिता 91:7 के वचनों के द्वारा मुझ से बात की, कि तेरे निकट हज़ार, और तेरी दहिनी ओर दस हज़ार गिरेंगे, परन्तु वह तेरे निकट न आएगा। मैंने उस वादे का दावा किया और उस नौकरी के लिए जाना शुरू किया। मैंने अपने हाथ से कोविड मरीजों को छुआ।

परमेश्वर ने मुझे दो महीने के लिए यह काम करने में सक्षम बनाया। जैसा कि वादा किया था, परमेश्वर ने मुझे सभी बुराई से बचाया। उस नौकरी के बाद मैं घर पर ही प्रार्थना करने लगी। मुझे नहीं पता था कि मेरे जीवन में परमेश्वर की क्या योजना थी: मेरे शहर की बहनों ने मुझे रविवार की क्लास लेने और घर पर बेकार न रहने के लिए कहा। मैंने अब तक रविवार की क्लास कभी नहीं ली थी। मैंने सोचा कि मैं यह कैसे करने जा रही हूं। मैंने प्रार्थना की और अपने पड़ोस के बच्चों को आमंत्रित किया: उनमें से 20 बच्चे आए और मैं उनके लिए हर हफ्ते रविवार की क्लास लेने लगी।

बहुत अच्छा। आपने रविवार की क्लास लेना शुरू किया, और क्या आपने केवल वही किया या आपने परमेश्वर के लिए कुछ और भी किया?

हाँ, मैंने किया। मेरा पढ़ाई का नतीजा आया और परमेश्वर ने मुझे एक निजी अस्पताल में नौकरी करने में योग्य बनाया। अस्पताल बहुत दूर था और रात की पाली में अस्पताल जाना मुश्किल था। इसलिए मुझे छात्रावास (हॉस्टल) में रहना पड़ा। मेरे लिए यह बहुत मुश्किल था क्योंकि मैं अपने परिवार से दूर थी और मुझे खाना भी पसंद नहीं था। इसलिए, मैंने छात्रावास छोड़ दिया, अस्पताल के पास एक घर ले लिया और हम वहाँ एक परिवार के रूप में रहने लगे। मैं दोपहिया वाहन से अस्पताल जाती थी। कोई औरत लिफ्ट मांगती तो मैं उन्हें साथ बिठाकर पहुँचा देती थी। मैंने सुसमाचार के पर्चे भी इकट्ठे किए और अपनी वर्दी की जेब में रख लिए। जिसे भी मैंने इस पर्चे को दिया है, मैंने यीशु के बारे में कुछ साझा किया और उन्हें एक पर्चा दिया और हमेशा कहा है कि यीशु उन्हें प्यार करते हैं। केवल यीशु के बारे में बताने के लिए मैं उन्हें अपने वाहन पर ले गई।

बहुत अच्छा। आप एक अद्भुत सेवकाई कर रही हैं। अस्पताल में आपकी नौकरी कैसी है?

मैंने आई.सी.यू विभाग का विकल्प चुना क्योंकि वहाँ सीखने के लिए बहुत कुछ है और साथ ही वहां के मरीज अकेले रहते हैं, और हमें उनकी देखभाल करनी होती है तथा उनकी जरुरत के काम भी करने होते हैं। मैं उनसे खुलकर बात कर सकती हूं, उनकी बात सुन सकती हूं और साथ ही मैं उन्हें यीशु के बारे में बता सकती हूं और इसलिए मैंने आई.सी.यू विभाग को चुना। मैं सोचती रहती थी कि मैं प्रत्येक रोगी से यीशु मसीह के बारे में साझा करूं। यहां तक कि जब मैं उनसे यीशु के बारे में बात नहीं कर पाती थी, तो जब भी मुझे उन्हें दवाई देनी होती थी, मैं प्रार्थना करती थी कि परमेश्वर उन्हें ठीक कर दें। मैं यीशु के बारे में बात करने के किसी अवसर से कभी भी नहीं चूकती। यहां तक कि जब मेरे काम का वक्त खत्म हो जाता है, तब भी मैं प्रतीक्षा करती हूँ और कम से कम एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनाती और फिर घर को जाती हूँ। बात करते समय, यदि वे पढ़ सकते हैं तो मैं उन्हें एक ट्रैक्ट दे देती हूँ और उन्हें पढ़ने के लिए कहती हूँ। इतना ही नहीं, जब मुझसे छोटे युवा अलग-अलग समस्याओं के साथ आते हैं, मैं बाइबल से दिलासा देने वाले शब्द साझा करती हूँ, मैं अपनी गवाही भी साझा करती हूँ और इस तरह मैं यीशु को दूसरों से मिलवाती हूँ।

बहुत अच्छा। जब आप अपने कार्यस्थल पर यीशु के बारे में साझा करती हैं, तो क्या कोई समस्या नहीं होगी?

मेरे रास्ते में कई समस्याएं आईं। जब मैं सुसमाचार बताती हूँ और किसी को मसीही पर्चा देता हूँ, तो मेरे वरिष्ठ कर्मी मुझ पर चिल्लाते हैं। यहां तक कि जब मैं कोई गलती नहीं करती, तो भी मुझ पर चिल्लाया जाता है शायद क्योंकि मैं यीशु के बारे में बताती हूं। मैं इस उम्मीद में कुछ नहीं करती कि परमेश्वर बदले में मेरे लिए कुछ करेंगे। मेरी एकमात्र इच्छा नाश होने वाली आत्माओं से सुसमाचार बांटना है। इसलिए, चाहे कितना भी चिल्लाना क्यों न हो, मैं यीशु के बारे में बताना बंद नहीं करूंगी।

अद्भुत! हम चाहते हैं कि आप परमेश्वर की महिमा के लिए और अधिक सेवकाई करें। आप युवाओं के लिए क्या साझा करना चाहेंगी?

मैं आपको मेरी तरह सब कुछ करने के लिए नहीं कह सकती, लेकिन मैं चाहती हूं कि आप सभी सुसमाचार को साझा करने की इच्छा करें। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस पेशे में हैं, आप फिर भी सुसमाचार साझा कर सकते हैं। जब आप प्रतिदिन कम से कम एक आत्मा से सुसमाचार बाँटने का निर्णय लेते हैं, तो परमेश्वर आपके लिए द्वार खोल देंगे।

प्रिय युवा! एक बहन जिसे छोटी उम्र में अपने पिता को खो देने के कारण परमेश्वर पर घृणा और क्रोध था, फिर भी उसके बढ़ने के समय परमेश्वर ने उसे अपने प्रेम का स्वाद चखने के लिए सक्षम किया और इससे उसे नाश हो रही आत्माओं से सुसमाचार साझा करने की तीव्र इच्छा हुई। आप भी एक दिन में एक व्यक्ति से सुसमाचार बाँटने का निर्णय ले सकते हैं और परमेश्वर आपको भी अधिक उपयोग करेंगे।

यहेजकेल

(वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ)

प्रिय युवाओ! इस महीने आएं हम प्रमुख भविष्यवाणी की पुस्तकों की चौथी पुस्तक, "यहेजकेल की पुस्तक" पर संक्षेप विवरण देखें।

परिचय:

भविष्यवक्ता यहेजकेल का परमेश्वर द्वारा अभिषेक किया गया था और वह पवित्र आत्मा के अधीन था। वह बंधुआ इस्राएल के कई पापों तथा उनके पापमय जीवन की निंदा करने के लिए परमेश्वर द्वारा प्रेरित किया गया था। वह उन लोगों को फटकार लगाता है जिन्होंने परमेश्वर एवं उनके वचन का विरोध किया था।

लेखक: यहेजकेल
अवधि: 565 ई.पू
पद: 1273
शब्द: 39407
महत्वपूर्ण पात्र: यहेजकेल

यहेजकेल में मसीह

मसीह को एक बड़े, ऊँचे पर्वत पर रोपित एक पतली टहनी के रूप में और यहेजकेल को मसीहा के रूप में चित्रित किया गया है।
उसे ऐसे राजा के रुप में जिसे शासन करने का (21:26,27) और एक सच्चे चरवाहे के रूप में सेवा करने का अधिकार है (34:11-31)।

यहेजकेल –- संक्षिप्त में

यहेजकेल की बुलाहट एवं सेवकाई

- यहेजकेल परमेश्वर की महिमा को देखता है (पद 1:1-28)
- उसे परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए बुलाया गया है (पद 2:1–3:27)

यरूशलेम व यहूदिया पर वर्तमान न्याय

- आगामी न्याय के संकेत (अध्याय 4, 5)
- आगामी निर्णय पर संदेश (अध्याय 6, 7)
- भविष्यवाणियां (अध्याय 8-11)
- न्याय व उसके परिणामों की निश्चितता (अध्याय 12-24)

अन्यजातियों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ

- अम्मोनियों के विरुद्ध (आयत 25:1-7)
- मोआबियों के विरुद्ध (आयत 25:8-11)
- एदोमियों के विरुद्ध (पद 25:12-14)
- पलिश्तियों के विरुद्ध (पद 25:15-17)
- सोर के विरुद्ध (श्लोक 26-28:19)
- सीदोन के विरुद्ध (पद 28:20-26)
- मिस्र के विरुद्ध (पद 29-32)

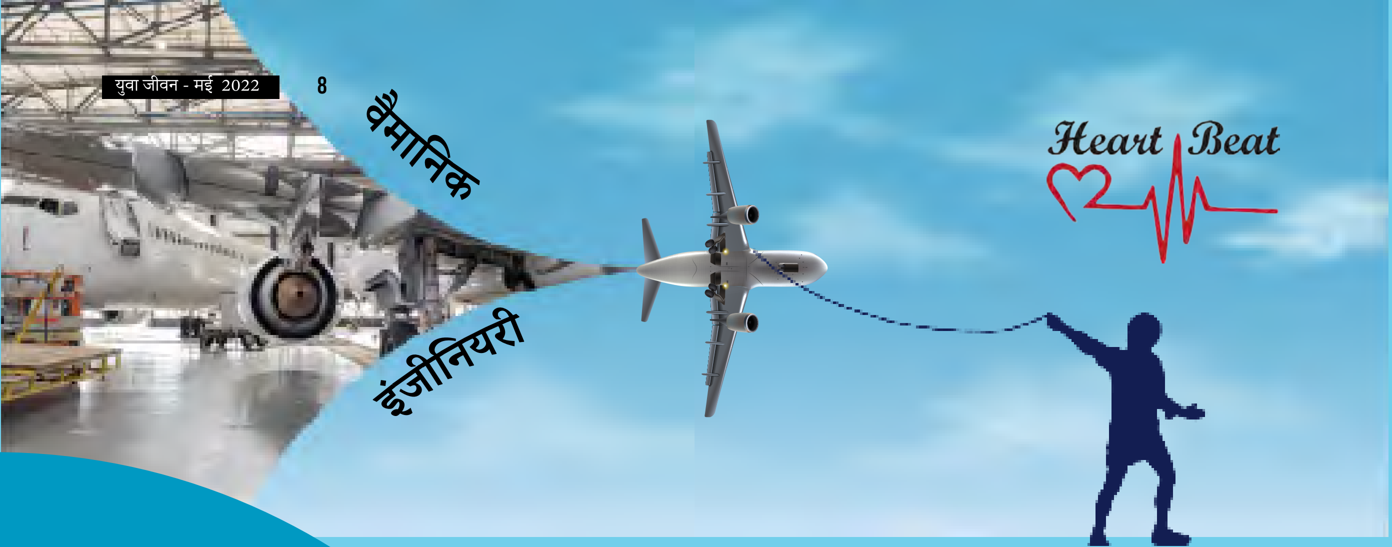

वैमानिक इंजीनियरी

Heart Beat

मैं 10वाँ कक्षा में पढ़ता हूँ। बीमारी के कारण दो महीने पहले मेरी माँ चल बसी। मेरी माँ मेरी जिंदगी थी और वह मुझे बहुत प्रिय थी। उनका सपना था कि मैं स्कूल की पढ़ाई पूरी कर वैमानिक इंजीनियरी में शामिल हो जाऊं। उन्होंने थोड़ा-थोड़ा कर कुछ हज़ार रुपये जोड़े थे। जैसे मैंने अपनी माँ को खो दिया जो मेरे भविष्य के लिए ऐसा सपना देखती थी, मैं इस वजह से बहुत चिंतित हूँ और अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने में अयोग्य हूँ। मैं परेशान और डरा हुआ हूँ कि कहीं यह वैमानिक इंजीनियरी का सपना पूरा होगा या नहीं। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। कृपया मेरी मदद करें।

महेश, तीरुवल्लूर

प्रिय भाई महेश! मैं आपकी माँ के खोने के कारण आपके भीतर की पीड़ा और दुःख को अच्छी तरह से समझ सकता हूँ। जब हम अपने प्रियजनों को खो देते हैं, तो इसका दर्द व दुःख बहुत भयानक होता है। इसके अलावा, क्योंकि यह आपकी माँ थी जो आपसे बहुत प्रेम करती थी, यकीनन ऐसा कोई नहीं है जो उनके जाने से आए खालीपन को भर सकता है।

लेकिन महेश, आप एक तरफ अपनी मां के नुकसान से जूझ रहे हैं और दूसरी तरफ आपका वैमानिक इंजीनियर बनने का उनका सपने से। यदि आप अपनी मां को खोने के इस गहरे दुःख में डूब जाते हैं तो आप शायद उस सपने को पूरा नहीं कर पाएंगे जो उन्होंने आपके लिए देखा था। उनकी इच्छा थी कि आप वैमानिक इंजीनियरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद सहायक विमान इंजीनियर बन जाएं।

महेश, यदि आप बहुत प्रयास करते हैं, तो अपने दुःख से परे आपके पास पढ़ाई करने का एक अवसर है। अधिकांश समय, जब आप ध्यान केंद्रित करते हैं और अपने सामने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, तो आप अपने जीवन में दुःख एवं पीड़ा की भावनाओं को दूर कर सकते हैं।

आप जानते हैं, यीशु आपके दुःख को बदल सकते हैं; वह आपको तसल्ली दे सकते हैं और आपके जीवन में खाली जगह को भर सकते हैं। यीशु आपके दिल की गहरी से गहरी पीड़ा को बदल सकते हैं और आपको एक नई शुरुआत दे सकते हैं। यदि आप थके और ढीले हो गए तो आपके पिता भी थक जाएंगे। लेकिन जब आप खुद मजबूत होंगे, तभी आप अपने

पिता को सांत्वना दे पाएंगे और आपका परिवार इस दुखद दौर से उभर पाएगा।

मैं एक ऐसे परिवार को जानता हूं जिसने दिल की किसी समस्या के कारण अचानक अपने पिता को खो दिया। उनके 2 बेटियां और 1 बेटा था। उनकी माँ बहुत सदमे में चली गई और उसे पता न चला कि क्या करे।

पूरा परिवार पूरी तरह से तबाह हो गया था, लेकिन उस माँ को केवल यीशु मसीह में आशा व शान्ति थी। वह दुःख से उभरी और अपने पति द्वारा छोड़े गए व्यवसाय को जारी रखा। यीशु पर भरोसा रखते हुए, यह विश्वास करते हुए कि यीशु उसके साथ हैं, और वह उसे मजबूत करेंगे और उसके तीनों बच्चों को बसाने में उसकी मदद करेंगे, उसने काम करना शुरू किया। आज वही मां कामयाब हो चुकी है। यह यीशु ही थे जिन्होंने उस परिवार को उस बड़े दुख तथा कठिन परिस्थिति से तसल्ली दी और उसे आगे बढ़ाया। यीशु आपका बोझ भी उठा लेंगे!

अपनी पढ़ाई जारी रखने और अपने सपने को पूरा करने के लिए कुछ सलाह:

▶▶ सबसे पहले, यदि आप अपना घर बदल सकते हैं, तो कोशिश करें और बदल लें, क्योंकि हर कमरा और हर चीज़ आपको आपकी माँ की याद दिलाती रहेगी।

▶▶ जब आप शोक व दु:ख के नीचे दबने लगें, तो इससे उबरने के लिए, बाइबल पढ़ें, कुछ अच्छे गाने सुनें, कुछ अच्छा संगीत सुने, अच्छे दोस्तों के साथ संगति करें और खुद को व्यस्त रखें। प्रार्थना करना कभी न छोड़ें।

यदि आप स्वयं को दु:ख में डुबाते हैं, तो इसके यह नतीजे होंगे:

▶▶ दुःख के कारण आपकी पढ़ाई छूट सकती है। आपकी माँ के सपने चकनाचूर हो जाएंगे।

▶▶ दुःख के कारण आप तनाव में जा सकते हैं और यह आपके स्वास्थ्य के साथ-साथ आपके जीवन को भी प्रभावित करेगा।

▶▶ आपके दुख का प्रभाव आपके पिता पर भी पड़ेगा।

इसलिए महेश, सोच समझकर काम करना। यीशु आपके दुःख को आनंद में बदल सकते हैं; वह आपके जीवन के अँधेरे को रोशनी के समान चमकने में बदल सकते हैं। बिना डरे आगे बढ़ें। परमेश्वर आपके साथ रहेंगे!

यीशु छुड़ाते है
YOUTH WORLD
SathiyamTV YouTube Comforter DIGITAL CHANNEL
प्रत्येक शनिवार सथयिम टीवी पर सुबह 6:30 बजे
और सुबह 7 बजे यूट्यूब और कंफंरटर टीवी पर

प्रयि युवाओं
अपने मत्रिों को इस कार्यक्रम से परचिति करवाएं
और और नीचे दएि गए नंबर पर हमें अपने द्वारा प्राप्त
की गईं आशीषों के बारें में बताएं
9750955547

आशा

गर्मी की छुट्टियों के दौरान किशोरों को नियंत्रित करना असंभव है। अधिकतर लड़के हाथ में बल्ला लेकर घूमने में व्यस्त होंगे, और लड़कियों की रुचि अपने गरमियों के पाठ्यक्रम को पूरा करने में होगी, और कुछ ऐसी होंगी जो घूमने-फिरने के शौकीन होंगी। गर्मी का मतलब है छुट्टियां, लेकिन इस मई 2022 ने सब कुछ बदल दिया है और गर्मियों के दौरान पहली बार हम छात्रों को अपने हॉल टिकट, पेन व पेंसिल में व्यस्त होते हुए देख सकते हैं। कई छात्रों को उम्मीद थी कि इस साल कोई परीक्षा नहीं होगी कि कोरोना उन्हें उनकी परीक्षा से बचा लेगा। लेकिन इससे उन्हें केवल निराशा ही हाथ लगी। शायद आप भी परीक्षा देखकर निराश हुए होंगे। आप यह सोचकर चिंतित हो सकते हैं कि आगामी परीक्षाओं का सामना कैसे किया जाए। जो भी हो, आपको किसी भी चीज़ की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि यहोवा का यह वचन कहता है कि "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।" (भजन 37:5)।

बड़े सपने और उम्मीदें रखने वाले छात्रों के लिए, लॉकडाउन के बाद गरीबी, कर्ज, उनके परिवारों में वित्तीय समस्याएं और भविष्य का डर उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती हैं। कई बाधाओं के बावजूद, केवल कुछ ही, जो अपने जीवन में आशावादी होते हैं, वह उपलब्धि प्राप्त करते हैं और सफल व्यक्ति बनते हैं। मदुरै जिले की मूल निवासी काव्या, जिसने बचपन से पायलट बनने का सपना देखा था, अपने सपने का पीछा करते हुए बड़ी चुनौतियों और संघर्षों का सामना कर रही थी। पैसा उसकी एक बड़ी समस्या थी, विशेषकर उसके भविष्य के सपने के लिए। उसे पायलट बनने के लिए पढ़ाई के खर्च के लिए करीब 25 लाख रुपये की जरूरत थी। लेकिन उसकी गरीबी ने उसे प्रशिक्षण जारी रखने की अनुमति नहीं दी। एक तरफ पारिवारिक परिस्थितियों से आर्थिक तंगी थी तो दूसरी तरफ उसके साथ रहने वालों के बेहूदा ताने निराशा का कारण बनते थे। लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी और संघर्ष करती रहीं और वर्ष 2018 में काव्या पायलट बन गई। क्या आप जानते हैं कि काव्या तमिलनाडु की पहली महिला पायलट हैं? आपके आस-पास विभिन्न परिस्थितियों के बावजूद, यदि आप आशा न खोएं और निराश न हों तो आप सफल हो सकते हैं।

यहां तक कि दाऊद ने भी अपने जीवन में कई कठिन परिस्थितियों का सामना किया। हालाँकि उसे अपने ही परिवार द्वारा छोटा समझा गया, उसके शत्रुओं ने उसका पीछा किया, कई लोगों ने उसे मारने की साजिश रची थी, लेकिन दाऊद को प्रभु में अथाह विश्वास था। निराशाएँ और असफलताएँ यहोवा पर दाऊद के विश्वास को हिला न सकी। इस कारण वह निडर होकर कहता है, "चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तो भी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चित रहूँगा" (भजन 27:3)। यहां तक कि आप भी इस समय खुद से सवाल करते हुए कठिन परिस्थितियों से गुजर सकते हैं, कि मेरा भविष्य कैसा होगा? क्या मैं उस परीक्षा में सफल हो जाऊँगा जो लिखने जा रहा हूँ? या मैं नहीं कर पाऊँगा? आप अपनी परीक्षा व भविष्य को लेकर चिंतित, निराश महसूस कर सकते हैं। चिंता मत करें! "क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा, और तेरे पाँव को फंदे में फँसने न देगा" (नीतिवचन 3:26)। जी हाँ, वह आपके साथ हैं और आपकी सहायता करेंगे। आशावादी बने। परमेश्वर के साथ आपके जीवन में कभी भी निराशाजनक क्षण नहीं होता है। इसलिए, साहसी बने और आत्मविश्वासी बने।

जैसा कि यूसुफ ने अपने जीवन में अपने सपने का पीछा किया, बातें कभी भी उसके अनुकूल नहीं दिखीं और जैसा उसने सोचा था वैसा कुछ नहीं हुआ। यूसुफ के जीवन में कई निराशाएँ, घृणा, दुःख और अपमान थे। लेकिन वह निराश नहीं हुआ। उसने विश्वास किया और आशा व्यक्त की कि एक दिन यहोवा उसका स्वप्न पूरा करेंगे। यहोवा ने यूसुफ के विश्वास एवं धीरज को देखा और उसे मिस्र देश में ऊंचा किया। आपका मार्ग जो भी हो, जब आप यीशु से कहते हैं, "... मैंने तुझी पर भरोसा रखा है। जिस मार्ग पर मुझे चलना है, वह मुझ को बता दे..." (भजन 143:8)। निश्चित रूप से वह आपकी आशा होंगे और आपको बचाएंगे।

प्रिय युवाओं! जब आप अपने परमेश्वर-प्रदत्त सपने या दर्शन का अनुसरण कर रहे होते हैं, तो दूसरों के शब्द आपको हतोत्साहित कर सकते हैं और हो सकता है कि ये काम आपकी योजना के अनुसार न हों। कई लोग कह सकते हैं कि आप उपलब्धि नहीं पा सकते और यह असंभव है। वे निराशा का कारण बन सकते हैं और यहां तक कि शायद आपका अपना विवेक भी आप पर विश्वास न कर पाए। किसी भी हाल में किसी बात की चिन्ता न करें, परन्तु यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखें, "उस पर...मैं भरोसा रखूँगा और न थरथराऊँगा;" (यशायाह 12:2)। परमेश्वर आपके विश्वास का सम्मान करेंगे और आप विजयी होंगे।

उपवास प्रार्थना

आइए प्रार्थना करें विजय

उपवास प्रार्थना का क्या अर्थ है?

उपवास का अर्थ है हमारे भोजन के कुछ भाग को या सारे भोजन को हमारी इच्छा से या आवश्यकता के अनुसार छोड़ देना। उपवास कोई रस्म नहीं है बल्कि यह परमेश्वर की उपस्थिति में खुद को नम्र करने तथा खुद को छोटा बनाने की भावना है। हम क्या करते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं यह प्रमुख बात है।

पुराने नियम के समय में बाइबल में उल्लिखित उपवास:

◀◀ उपवास एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति अपने भोजन से परहेज करके परमेश्वर के क्रोध को कम करने व उनसे क्षमा मांगने के लिए करता है।

◀◀ आपात स्थिति में लोगों ने उपवास कर परमेश्वर से उनकी समस्याओं से बचने की गुहार लगाई। (न्यायियों 20:26; 1शमूएल 7:6; 1राजा 21:9; इतिहास 20:3 यिर्मयाह 36:6, 9)।

◀◀ लोगों ने उन्हें खतरनाक समस्याओं से बचाने के लिए उपवास के साथ परमेश्वर से प्रार्थना की (2शमूएल 12:16-20; 1राजा 21:27; भजन संहिता 35:13, 69:10)। उन्होंने प्रार्थना भी की और प्रार्थना के एक अंश के रूप में उपवास किया (एज्रा 8:21; नहेमायाह 14:12)।

◀◀ मूसा ने सीनै पर्वत पर 40 दिनों तक उपवास किया (व्यवस्थाविवरण 34:28) ।

◀◀ दानिय्येल ने दर्शन प्राप्त करने से पहले 3 सप्ताह तक उपवास किया (दानिय्येल 9:3, 10:3, 12)।

नए नियम के समय में:

◀◀ यीशु मसीह ने उपवास के वास्तविक होने और इसे गुप्त में किए जाने वाले कार्य के रूप में प्रचार किया।

◀◀ शैतान पर विजय पाने के लिए उपवास करना आवश्यक है (मत्ती 17:21)

◀◀ परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए उपवास आवश्यक है (प्रेरितों के काम 13:2)

हम बाइबल के आधार पर कैसे उपवास कर सकते हैं?

◀◀ बिना कुछ खाए-पाए उपवास (योना 3:7); भोजन का थोड़ा भाग (1तीमुथियुस 5:23); स्वादिष्ट भोजन को छोड़ कर उपवास करना।

◀◀ हमें पहले अपने पापों का अंगीकार करना चाहिए और परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। अन्य कार्यों से बचना और उपवास के दौरान ध्यान केंद्रित करना बेहतर है।

◀◀ यशायाह 58:7 में परमेश्वर हमसे कहते हैं कि, "क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बाँट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना?"

इसलिए परमेश्वर को प्रसन्न करता उपवास करने के लिए खुद को प्रशिक्षित करें। आपकी उपवास प्रार्थना शैतान की सभी नींव को नष्ट कर देगी, शैतान का पीछा करेगी तथा राष्ट्र को बचाएगी। इसे न भूलें!

परमेश्वर इसे करेंगे!

"अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।" भजन संहिता 37:5

आज आप पढ़ाई, व्यापारिक कामों, घर के निर्माण, विवाह प्रस्ताव या गर्भ की आशीष में देरी के कारण तथा आपके विकास को रोकने वाली सभी रुकावटों के कारण बहुत परेशान हो सकते हैं। परमेश्वर आपको अपने वादे के साथ प्रोत्साहित करना चाहते हैं "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।"

यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में ये सभी बातें पूरी हों तो हमें क्या करना चाहिए? हमें परमेश्वर के वादों पर विश्वास करना चाहिए; हमें प्रार्थना में वचन का दावा करना चाहिए और उसका अंगीकार करना चाहिए। यदि हम बहाने बनाते रहें कि वे वादे के वह वचन बाइबल के ऐतिहासिक समय के लिए, किसी और के लिए तथा किसी अन्य राष्ट्र के लिए लिखे गए थे, तो हम अपने जीवन में चमत्कारों का अनुभव नहीं कर सकते। जिस किसी से भी यह वादा बताया जाए, हमें विश्वास करना चाहिए कि यह परमेश्वर का वचन है और हमारे लिए सत्य है। साथ ही, जब हम परमेश्वर के वचन का दावा करते हैं और वचनों के अनुसार प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर हमारे जीवन में चमत्कार करेंगे क्योंकि वह हमारे वादा निभाने वाले परमेश्वर हैं।

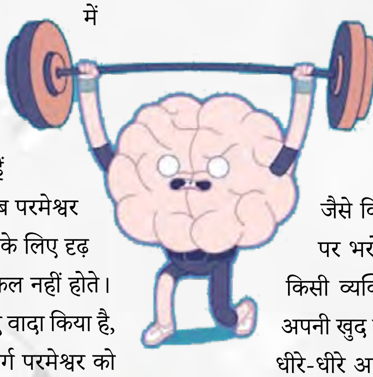

लोग हमारे लिए बहुत कुछ करने का वादा करते हैं लेकिन समय बीतने पर वे इसे भूल जाते हैं। लेकिन जब परमेश्वर हमसे वादा करते हैं, तो वह हमारे लिए उन्हें पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित होते हैं। परमेश्वर अपने वचन में कभी असफल नहीं होते। यदि परमेश्वर को वह पूरा करना है जो उन्होंने हमारे लिए वादा किया है, तो हमें 2 मुख्य कार्य करने होंगे: पहला, हमें अपने मार्ग परमेश्वर को सौंपने होंगे। क्या आप अपनी जंग जीतना चाहते हैं? क्या आप अपने जीवन में किए गए वादे को पूरा होते देखना चाहते हैं? यदि ऐसा है, तो आपको अपने सभी मार्गों को परमेश्वर को समर्पित करना होगा। दूसरी बात, आपको उन पर पूरे दिल से भरोसा करना चाहिए। आज आपने अपना भरोसा कहाँ रखा है? क्या आपको अपनी नौकरी, जीवन का पेशा, व्यवसाय या अपने भविष्य पर कोई गलत भरोसा है?

यहोवा यों कहता है: "यहोवा यह कहता है, "श्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है" (यिर्मयाह 17:5)। दो बातें हैं जिन पर हम आमतौर पर भरोसा करते हैं। पहली हमारे आस-पास के लोगों पर – हम मानते हैं कि जिन लोगों पर हम भरोसा करते हैं वे हमारी देखभाल करेंगे, हमारी मदद करेंगे तथा हमें हमारी सभी ज़रूरतें प्रदान करेंगे। यह मनुष्यों पर भरोसा रखना है। दूसरी बात है केवल अपने आप पर निर्भर रहना ऐसा कहते हुए कि 'मुझ में इसे करने का साहस है, मेरे पास बल व आवश्यक प्रतिभा है, मैं इसे पूरा करूंगा, मेरे पास पर्याप्त अनुभव है'। यह स्वयं पर निर्भर रहना है। यदि आप परमेश्वर, अपने सृजनहार पर भरोसा नहीं करते हैं और इसके बजाय अपने आस-पास के लोग पर या आपके बल पर भरोसा करते रहें, बाइबल इसे एक श्राप के रूप में घोषित करती है!

बहुत से लोग अपने शैक्षिक कौशल, प्रतिभा, कड़ी मेहनत व पिछली उपलब्धियों पर भी भरोसा करते हैं। इसके अलावा, कुछ लोग मंत्रियों और प्रभावशाली लोगों जैसे कि वी.आई.पी. लोगों से अपनी जान-पहचान पर भरोसा करेंगे। हमें संदेह हो सकता है कि 'क्या किसी व्यक्ति पर भरोसा करना गलत है?' जब आप अपनी खुद की प्रतिभा और लोगों पर भरोसा करते हैं, तो धीरे-धीरे आप अपने हृदय में परमेश्वर से दूर जा रहे हैं। आप परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे और नियमित रूप से बाइबल पढ़ेंगे और

यहाँ तक कि यह अंगीकार करेंगे कि परमेश्वर ही सब कुछ है; लेकिन, अपने भीतरी हृदय में आप केवल मनुष्यों पर ही भरोसा करेंगे। इसी कारण, कभी-कभी परमेश्वर लोगों को हमारी मदद करने से रोकते हैं। परमेश्वर स्वयं लोगों को हमारी मदद करने के लिए कुछ रुकावटों की अनुमति देते हैं और बदले में हमें प्राप्त होने वाले एहसानों को भी रोक देते हैं। अनजाने में, हम लोगों पर तथा खुद के बल पर भरोसा करने की ओर बढ़ जाते हैं जो हमारे जीवन में श्राप लाने के मुख्य कारण हैं। आज आपका भरोसा कहाँ है?

मैं एक बूढ़ी माँ को जानता हूँ जो चेन्नई में रहती है। घर के कामों के अलावा, वह अपना सारा समय बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने में लगाती थी। जब भी मैं उनसे मिलता, वह मुझसे वचनों के बारे में बात करतीं और परमेश्वर के बारे में बातचीत करतीं। परमेश्वर का वचन उनके जीवन का सार था। एक दिन, जब मैं उनसे बातें कर रहा था, उन्होंने कहा, 'मेरे प्रिय भाई, मेरे मन में कोई बात परेशान कर रही है'। मैंने तुरंत उनसे पूछा, 'माँ, आप हमेशा बाइबल पढ़ रही हैं तथा प्रार्थना कर रही हैं, आपको उदास क्यों होना है? क्या बात है?" उन्होंने अपनी पीड़ा का कारण बताया, तीन साल पहले, उन्होंने अपने पड़ोसी से चेन्नई की यात्रा के लिए 300 / - रुपये उधार लिए थे, अब तीन साल बाद भी वह राशि वापस करने में असमर्थ है और यह बात उन्हें बहुत दोषी बनाती है'।

'आप उदास क्यों महसूस कर रही हैं? आपके बच्चे अच्छी कमाई कर रहे हैं, आप इसे आसानी से वापस कर सकती हैं' मैंने कहा। 'हाँ, मैंने ऐसा सोचा था' उन्होंने कहा। मैंने अपने प्रत्येक बच्चे से मुझे 100 रुपये देने के लिए कहा ताकि मैं वह राशि लौटा सकूं, लेकिन वे सब मुझे सौ रुपये देने में भी बहुत झिझक रहे हैं।' फिर मैंने उनसे पूछा 'यदि ऐसा है, तो आपने अपने पड़ोसी से कर्ज के रूप में 300 रुपये किस आधार पर प्राप्त किए?' उन्होंने दुखी होकर कहा, "मैंने तीन बच्चों को बड़े बलिदान के साथ पाला, उन्हें एक अच्छा भविष्य दिया और उन पर भरोसा किया कि वे इसे चुका देंगे, इस बात के आधार पर मैंने वह पैसा उधार लिया।" मैंने उन्हें समझाया कि उन्होंने वास्तव में वही गलती की थी, आपको अपने बच्चों, उनकी नौकरी, उनकी कमाई पर भरोसा करने के बजाय परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए था: यह सोचकर कि वे आपके द्वारा उधार लिए गए पैसे को लौटा देंगे, लेकिन फिर भी 3 साल बाद भी आप वह राशि चुकाने में असमर्थ हैं, यह वास्तव में एक गलत विचार था कि आपने परमेश्वर के बजाय अपने बच्चों पर भरोसा किया कि वे आपका ख्याल रखेंगे! बूढ़ी मां ने इस पर सोचना शुरू कर दिया, वह तुरंत अपनी गलती समझ गई और मुझे परमेश्वर से क्षमा माँगने की प्रार्थना करने को कहने लगी क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से बढ़कर अपने बच्चों पर भरोसा किया था।

साथ ही, मैंने उन्हें यह भी कहा कि उन्हें जल्द से जल्द वह राशि चुकानी होगी। अगले हफ्ते, जब मैं वहां गया, तो उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने यह अंगीकार करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह अब अपने बच्चों पर भरोसा नहीं करेंगी और परमेश्वर उन्हें अपने पड़ोसी के पास लौटने के लिए पैसे प्रदान करें। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और उन्हें 300 रुपये प्रदान किए जो उन्होंने तुरंत उस पड़ोसी को लौटा दिए। जब मैंने पूछा कि क्या उनके बच्चों ने उनकी मदद की, तो उन्होंने कहा, 'नहीं, परमेश्वर ने किसी अज्ञात स्रोत से उनकी जरूरतों को पूरा किया'!

परमेश्वर पर भरोसा रखें; अपने व्यापार पर नहीं लेकिन परमेश्वर पर भरोसा रखें जो आपके व्यवसाय को आशीर्वाद देते हैं! अपना भरोसा अपने करियर पर नहीं बल्कि अपने परमेश्वर पर रखें जिन्होंने आपको नौकरी प्रदान की है! 'धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो' (यिर्मयाह 17:7)। आज आपने किस व्यक्ति पर भरोसा किया है? आज आपने किस चीज़ पर भरोसा किया है? क्या यह आपके माता-पिता या आपके व्यवसाय पर या आपकी नौकरी तथा पदोन्नति पर है? साहसपूर्वक घोषणा करें कि आप परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। नौकरी में कोई संकट आए तो भी घबराएं नहीं। एक परमेश्वर है जो आपको प्रदान करेंगे, आपको खिलाएंगे और आपकी सभी जरूरतों का ख्याल रखेंगे। परमेश्वर आपको कभी नहीं छोड़ेंगे; वह सब काम पूरे करेंगे!

'यहोवा की शरण लेना, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है।' (भजन 118:8)। कुछ लोगों के लिए, यदि वे अपने स्थानीय किसी विधायक से परिचित हैं, तो वे ऐसा व्यवहार करेंगे जैसे पूरी दुनिया उनके हाथ में हो। उनका पूरा भरोसा उस विधायक पर होता है। जो कार्य परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किए हैं उन्हें पूरा करने के लिए परमेश्वर हमारे हक में किसी विधायक, मंत्री और यहां तक कि एक मुख्यमंत्री का भी उपयोग कर सकते हैं। हमें अपना भरोसा हाकिमों एवं शासकों पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर रखना चाहिए जो उन्हें नियुक्त करते हैं। अपने मार्ग परमेश्वर को सौंप दें। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है!

मेरे प्रिय युवाओं, वह एक ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारे लिए कामों को पूरा करते हैं। भले ही हम अपनी ताकत, प्रयास, प्रतिभा के साथ और हमारे आस-पास के उन कई प्रभावशाली लोगों के साथ, जो हमारी मदद कर सकते हैं, बड़े कामों को पूरा करने तथा हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन केवल परमेश्वर ही इसे पारित कर सकते हैं! इसलिए, अपना पूरा भरोसा परमेश्वर पर रखें और उन्हें ही थामे रहें। वह आपकी सारी मनोकामनाएं पूरी करेंगे, आमीन!"

कभी हार न माने किसी भी समय!

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? मैं मानता हूँ कि आप सभी खुद को हर दिन बड़े उत्साह और ऊर्जा के साथ सफलता के लिए तैयार कर रहे हैं। कभी किसी काम से मत थकें। यहां आपके लिए एक विजेता का जीवन प्रस्तुत है, जो आपको भविष्य में सफल होने के लिए और अधिक तैयार करेगा!!

सभी सफल लोगों की तरह, आज हम जिस उपलब्धि प्राप्त कर्ता को देखेंगे, उसका जन्म एक बहुत ही गरीब परिवार में पांच में से चौथे बच्चे के रूप में हुआ। उस बच्चे का नाम "माइकल जॉर्डन" है। इस परिवार के लिए एक दिन में तीन समय भोजन कर पाना एक दूर का सपना था। माइकल जॉर्डन सभी छोटे बच्चों की तरह नहीं रह पाया। परिवार का माहौल जॉर्डन की खुशी में एक बड़ी बाधा था। परिणामस्वरूप, जॉर्डन तनाव में आ गया। जब जॉर्डन मन में बिलकुल थक गए, जॉर्डन के पिता ने उसे यह बताना चाहा कि उसके लिए जीवन क्या था। वह एक डॉलर की एक कमीज़ खरीदता है, इसे जॉर्डन को दे देता है, और उससे कहता है कि तुम्हें इस एक डॉलर की कमीज़ को $2 में बेचना है। जॉर्डन ने भी उत्सुकता से उसे खरीदा, उसे अच्छी तरह धोया, अच्छी तरह से लपेटा और अगली सुबह बाजार में बेचने चला गया। एक आदमी ने वह कमीज़ 2 डॉलर में खरीद ली क्योंकि वह एक 13 साल का और एक गरीब लड़का था। जॉर्डन ने भी उत्सुकता से वह $2 लिए और अपने पिता के पास दौड़ गया। लेकिन जॉर्डन के पिता बिल्कुल भी खुश नहीं थे और 15 दिनों के बाद जॉर्डन के पिता ने उसे फिर से एक डॉलर की कमीज़ 20 डॉलर में बेचने के लिए कहा। जॉर्डन ने कहा कि मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कर सका।

तभी उसके पिता ने उससे कहा कि इस दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जो नहीं किया जा सकता। तुम इस कमीज़ की कीमत जानते हैं, लेकिन दूसरे नहीं जानते। उन्होंने कहा कि जब तुम इसे बेचोगे तो तुम अपनी प्रतिभा को समझ पाओगे। जॉर्डन ने इस बार अपनी कमीज़ पर मिकी माउस का चित्र छापा और एक प्रसिद्ध स्कूल के दरवाजे पर खड़ा हो गया।

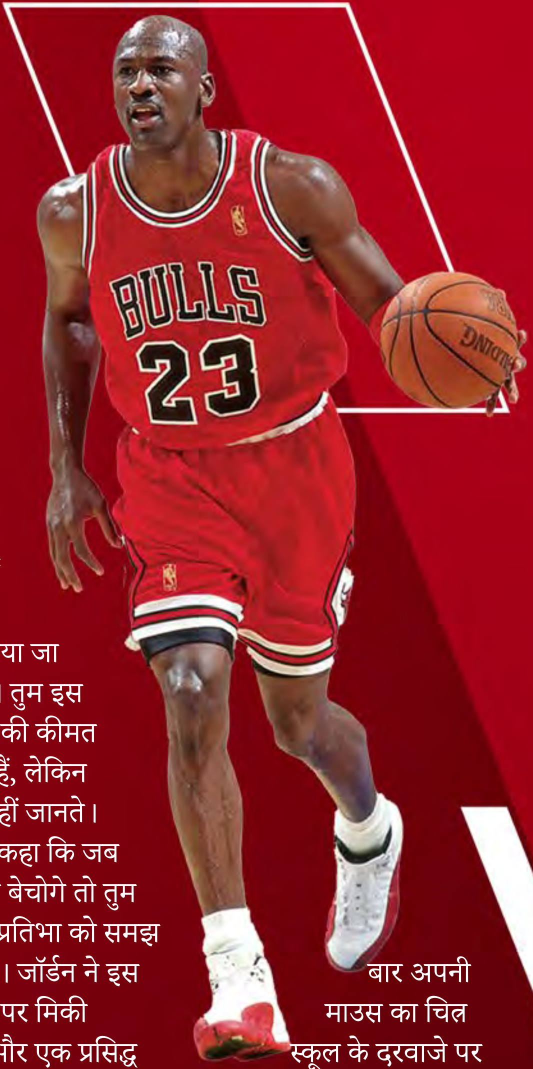

एक स्कूल के लड़के ने मिकी माउस की फोटो को देखा और $5 ज्यादा देकर $25 में वह कमीज़ खरीद ली। जॉर्डन की खुशी की कोई सीमा नहीं थी। वह दौड़कर अपने पिता के पास गया और उसे 25 डॉलर दे दिए। पिता अभी भी खुश नहीं है। फिर से जॉर्डन के पिता उसे एक कमीज़ देते हैं और कहते हैं कि उसे इसे $300 में बेचना होगा, न कि $20

में। जॉर्डन ने भी इसे थकान तथा व्याकुलता के साथ खरीदा। अगली सुबह, जब उसे पता चला कि एक प्रसिद्ध अभिनेता उसके शहर में आ रहा है, तो उसने वह कमीज़ उठाई, उस पर उस अभिनेता के हस्ताक्षर लिए और उसे बाजार में नीलामी के लिए रख दिया। लोगों ने उस कमीज़ को प्राप्त करने के लिए $1,200 तक दे दिए। उसने वह पैसे लिए और अपने पिता के पास आ गया, जॉर्डन के पिता ने वह पैसे ले लिए और पूछा कि उसने इन घटनाओं से क्या सीखा है। फिर उन्होंने यह कहकर खुद को प्रोत्साहित किया, "जहाँ चाह है वहाँ राह है।" उसने जीवन को बड़ी शान से जीना सीखा। जॉर्डन का सपना एक महान खिलाड़ी बनना था, और उसकी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा बास्केटबॉल खिलाड़ी बनना और उस स्कूल की बास्केटबॉल टीम का हिस्सा बनना था जहां वह पढ़ रहा था। उसकी (5 फीट 11 इंच) ऊंचाई उसकी महत्वाकांक्षा और उसके सपने में एकमात्र बड़ी बाधा थी। जब माइकल जॉर्डन ने उस स्कूल में परीक्षा दी जिसमें वह जाता था तब वह सबसे छोटा था। हालांकि उसकी प्रतिभा बहुत दुर्लभ थी, लेकिन उसका कद ऐसा था कि उसका सपना पूरा नहीं हो सकता था। स्कूल में, उसे केवल इसलिए अस्वीकार कर दिया गया क्योंकि वह लंबा नहीं था। इससे तंग आकर जॉर्डन घर गया, दरवाज़ा बंद किया और रोने लगा। एक घंटे तक रोने के बाद ही उसे अपने पिता के शब्द याद आए कि दुनिया को अपनी प्रतिभा दिखाने और अपने मार्ग में आने वाले अवसरों को कभी न छोड़ने की जिम्मेदारी उसी की है। वह तुरंत अपने कोच के पास गया और उसे टीम में शामिल होने के लिए कहा, भले ही वह बास्केटबॉल न खेले। कोच ने कहा, ठीक है, खिलाड़ियों के कपड़ों की रक्षा करने वाले एक लड़के की तरह हमारे साथ रह ले।

जॉर्डन सभी खिलाड़ियों की वर्दी उठाता है और मैच में जाता है। जॉर्डन के माता-पिता भी मैच देखने आए थे। वे यह देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे थे कि जॉर्डन कितना अद्भुत खेल रहा है। लेकिन जॉर्डन उन्हें यह खुशी नहीं दे सका। अपने माता-पिता के सामने, जो उन पर विश्वास करते थे, उसे बहुत अफ़सोस हुआ कि वह एक बड़ा खिलाड़ी नहीं था, बल्कि एक वर्दी उठाने वाला एक लड़का था। उसे न केवल यह खेद हुआ, बल्कि वह जीत के लिए लड़ने लगा। वह दिन में 2 घंटे अभ्यास करने लगा। फिर उसने 4 घंटे तक अभ्यास किया। अगले वर्ष में, जॉर्डन ने ऊंचाई में 10 इंच की वृद्धि की। परिणामस्वरूप, उसकी ऊंचाई 6 फुट हो गई। जॉर्डन को अगली जाँच में चुन लिया गया। उसने अपनी प्रतिभा से दुनिया को अवगत कराया। उसने अपनी प्रतिभा को इस हद तक साबित किया कि उसे कोई हरा नहीं सकता। उसने अब तक पांच बार एम.वी.पी. पुरस्कार जीता था, जिसे बास्केटबॉल जगत में सर्वोच्च उपलब्धि माना जाता है।

जब इंटरव्यू में उससे पूछा गया कि वह इतनी ऊंचाई तक कैसे पहुंचा, तो उसने कहा, "यदि आप एक विजेता बनना चाहते हैं, तो आपको हारना सीखना होगा। प्रत्येक हार हर जीत के लिए एक कदम है। मैंने अपने जीवन में 9,000 बार अपने निशाने का मौका बर्बाद किया है।

अब तक, मैं 300 पारियों में असफल रहा हूं। मैंने 26 बार उस अवसर को बर्बाद किया जब मुझे और बाकी सभी को उम्मीद थी कि मैं निशाने पर बॉल डालने से टीम को जीत दिलाऊंगा। एक बार जब आप हार मान लेना शुरू कर देते हैं, वही आदर्श बन जाता है," उसने कहा। आधे प्रशंसक सिर्फ जॉर्डन को देखने पहुंचे थे। वह गुलाब, जो दिखने में सुंदर हो, उसे पौधों में कांटों को सहारा देना चाहिए। इस दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं है जिसने बिना असफल हुए जीत हासिल की हो, लेकिन आप हारने के लिए नहीं, बल्कि जीतने के लिए पैदा हुए हैं।

प्रिय युवाओं! आज आप भी, जॉर्डन की तरह, उम्मीद खो चुके होंगे कि आप में कुछ गड़बड़ है और आप कुछ नहीं कर सकते? अपने फैसले को कभी मत छोड़ें! जॉर्डन की तरह कोशिश करते रहें! आपको ऊंचाईयों तक पहुँचने का अपना रास्ता मिल जाएगा!!

बिखरे हुए विचार

एक अन्यजाति स्त्री का विश्वास

जब यीशु पृथ्वी पर रह रहे थे, वे कई नगरों में गए और बहुत से चमत्कार किए। ऐसा ही एक नगर था सोर और सीदोन जहाँ यीशु की भेंट एक कनानी स्त्री से हुई। जब उसने यीशु के बारे में सुना, तो वह उनसे मिलने आई, उनके पैरों पर गिर गई, और उनसे अपनी बेटी को एक दुष्टात्मा के चंगुल से बचाने के लिए विनती करने लगी, जो उसकी बेटी को सता रही थी। लेकिन यीशु ने उत्तर दिया कि बच्चों का खाना लेकर कुत्तों के आगे फेंकना उचित नहीं। उस स्त्री ने कहा कि कुत्ते भी अपने स्वामी की मेज से गिरने वाले टुकड़ों को खाते हैं। यीशु उसके विश्वास से चकित हुए। उन्होंने उसे यह कहते हुए उत्तर दिया, "हे स्त्री, तुम्हारा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है वैसा ही तेरे लिए हो।" उसी घड़ी उसकी बेटी ठीक हो गई।

प्रिय युवाओं, हमारा विश्वास परमेश्वर में होना चाहिए। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं और आपकी परिस्थितियाँ कितनी भयानक हैं, यदि आपका विश्वास कनानी स्त्री के विश्वास जितना बड़ा है, तो अब परमेश्वर आपके जीवन में अविश्वसनीय चमत्कार करेंगे। अपने विश्वास को बड़ा होने दें! आप चमत्कार देखेंगे!

उसके घुटनों में विश्वास

रेव. मार्गोशस

हैजा का नाम सुनते ही आपके होश उड़ जाएंगे। यह कितनी घातक बीमारी है। 1920 में, हैजा ने तिरुनेलवेली के नासरत पर हमला किया। कई लोग मर गए। कई अनाथ हो गए। बिना किसी परवाह करने वाले और उन्हें सांत्वना देने वाले के लोग निराशाजनक स्थिति में रो रहे थे। इस विकट स्थिति को देखकर, रेव. मार्गोशस उदास हो गए। उन्होंने लोगों को मौत से बचाने का एक तरीका सोचा। उसने अपने घुटनों पर भरोसा किया, एक चर्च में प्रवेश किया, परमेश्वर के सामने गिर गया, और आँसुओं के साथ प्रार्थना की। यह जानते हुए कि केवल परमेश्वर ही इन लोगों को बचा सकते हैं, उन्होंने घंटों परमेश्वर से विनती की। उनकी प्रार्थना सुनी गई और उनका उत्तर दिया गया। बहुत से लोग ठीक हुए और बच गए। अब रेव. मार्गोशस को नासरत के पिता के रूप में जाना जाता है। नासरत में बना कैथेड्रल उनकी दर्शन की ही क्रिया है।

प्रिय युवाओं, आपका विश्वास कहाँ या किस पर टिका है? इसके बारे में सोचें। किसी भी समय, यदि आप अपने घुटनों पर विश्वास करते हैं, तो आप सफलता के साक्षी बनेंगे। घुटने टेककर की गई प्रार्थना में कुछ भी बदलने की शक्ति होती है। अपने घुटनों पर और प्रार्थना पर विश्वास रखें! आप छुटकारे के साक्षी होंगे!

संघर्षों के बीच विश्वास

पौलुस व सीलास

जब पौलुस व सीलास प्रार्थना करने जा रहे थे, तो उन्होंने भावी कहती एक दुष्टात्मा को निकाल दिया। इसके चलते बड़ी समस्या खड़ी हो गई। लोगों ने इकट्ठा होकर पौलुस और सीलास को पीटा, उन्हें नुकसान पहुँचाया, उनके कपड़े फाड़ दिए और उन्हें बंदीगृह में डाल दिया। दरोगा ने उनके पैरों को लकड़ी की बड़ी काठ में ठोक दिया। आधी रात को, पौलुस और सीलास ने प्रार्थना की और विश्वास के साथ परमेश्वर की आराधना की। बंदीगृह में सभी कैदी उन्हें सुन रहे थे। अचानक एक भूकंप आया जिसने बंदीगृह की नींव को हिला दिया। जल्द ही बंदीगृह के द्वार खुल गए। उनकी सारी जंजीरें खुल गईं। उन्होंने बंदीगृह में परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। उस दरोगा ने और उसके साथ के लोगों ने परमेश्वर में विश्वास किया और उसी रात बपतिस्मा लिया।

प्रिय युवा! जब हम परमेश्वर के लिए अपना जीवन जीते हैं और परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास रखते हैं, प्रार्थना करते हैं और पौलुस व सीलास की तरह भजन गाते हैं, चाहे हम कितनी भी समस्याओं का सामना करें, आपकी कैद बदल जाएगी, आपकी बेड़ियां खुल जाएंगी और आपकी परेशानियों के माध्यम से परमेश्वर की महिमा मिलेगी। इसलिए संकटों एवं समस्याओं के बीच परमेश्वर पर विश्वास रखें। वह आपके संघर्ष को जीत में बदल देंगे। विशवास रखें!

भय के बीच में विश्वास

मार्विन एग

मार्विन एग और उनकी पत्नी अफ्रीका के घने जंगल में सेवकाई कर रहे थे। कुछ समय बाद, उन्होंने अपनी सेवकाई का विस्तार करने के लिए एक घर बनाने के बारे में सोचा। घर बनाने के लिए ईंटें बनाने के लिए उन्हें एक कस्बे में जाना पड़ा। उन्हें पालोइच कहलाते एक कस्बे में जाना था जहाँ जंगल के लोग रहते थे। वे लोग दिन में उसके लिए काम करते थे और रात में अपने घरों को लौट जाते थे। उन लोगों ने मार्विन को अपने घरों में नहीं रहने दिया। इसलिए जिस स्थान पर वह अपना घर बना रहा था, उसके पास एक पेड़ के नीचे उसने मच्छरदानी बांध दी और वहीं सो गया। यह शेरों और अन्य जंगली जानवरों से भरा एक जंगल था। उस रात मार्विन ने शेरों की दहाड़ सुनी। उनके पास आत्मरक्षा के लिए बंदूक भी नहीं थी। हालाँकि उन्हें परमेश्वर पर विश्वास था, उन्होंने अपने आप में सोचा कि वह एक कुल्हाड़ी की मदद से शेर को मार सकते हैं। उस समय मार्विन एग ने एक आवाज सुनी जो पूछ रही थी “क्या तुम मुझ पर भरोसा करते हो?” जिससे उन्हें अपने अविश्वास के लिए बुरा लगा और उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करना शुरू कर दिया। तभी तीन शेर आए और उन्हें सूंघकर फुर्ती से निकल गए। परमेश्वर द्वारा उन्हें बचाने के कार्य के बारे में सोचते हुए, उन्होंने न केवल परमेश्वर को धन्यवाद दिया, बल्कि उन लोगों के बीच समाचार भी फैलाया और उन्हें परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रिय युवाओं! आप जिस भी स्थिति में फंसे हों, किसी भी चीज़ या किसी व्यक्ति पर अपना भरोसा रखने के बजाय, पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा रखें और वह आपको उस स्थिति से निकाल देंगे। पूर्णतय भरोसा करें और आप बच जाएंगे।

अर्थव्यवस्था (जागृति)

जब एक देश में पुनरुत्थान होगा तो आशीष भी होगी और इसमें कोई संदेह नहीं है। जब एक देश पर जागृति की आग उंडेली जाती है तो वह देश शुद्ध हो जाएगा, श्राप दूर हो जाएंगे और उस देश पर आशीष की वर्षा होगी। जब एक देश के शासकों पर प्रभु का शासन होगा तब वहाँ इस तरह के परिवर्तन होंगे। वचन में भी, जब हिजकिय्याह और यहोशापात ने उस देश पर शासन किया, तब वे वही करने लगे जो यहोवा को भाता था।

हिजकिय्याह ने भविष्यद्वक्ता यशायाह के संपर्क में आकर वही किया जो यहोवा को भाता था और उस देश में जागृति का कारण बना। अपने राज्य के पहिले वर्ष में उस ने याजकों और लेवियों को बुलाकर परमेश्वर के मंदिर की मरम्मत की, और लोग यहोवा के पास लौट आए। पूरे देश में अपार हर्ष और उल्लास छा गया। "इस प्रकार यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी।" (2इतिहास 30:26)

हिजकिय्याह के पास बहुत सा धन और बल था। वह देश भी आशीषित था। हिजकिय्याह की नाई यहोशापात ने भी वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था। उसने मूर्तियों व वेदियों को हटा दिया और याजकों को सारे यहूदा नगर में परमेश्वर के वचन को फैलाने के लिए खड़ा किया। "याजकों ने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लिये हुए यहूदा में शिक्षा दी, वरन् वे यहूदा के सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे" (2इतिहास 17:5)। और उसके द्वारा सारे देश में परमेश्वर का वचन पहुंचा। पूरे नगर में खुशी व शांति थी। जब यहोवा परमेश्वर एक देश के शासकों पर शासन करते हैं तो वह देश धन्य होगा।

दक्षिण कोरिया जीडीपी के मामले में दुनिया का 11वां देश है। यह 1960 के दशक से 1990 के दशक के अंत तक सबसे तेजी से बढ़ते देशों में से एक था। 2000 के बाद देश की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ी है। यह वह समय था जब दक्षिण कोरिया में पॉल योंगी चो द्वारा एक कलीसिया स्थापित की गई थी और एक बड़ी जागृति आई थी।

उनके माध्यम से परमेश्वर दक्षिण कोरिया में महान आशीष और शांति लेकर आए। लोगों को बचाया गया और उन्होंने प्रभु के सामने पश्चाताप किया, और साथ ही, देश की संपत्ति में वृद्धि हुई और पूरे देश को आशीष मिली।

प्रिय युवाओं, हमारे देश को धन्य व समृद्ध होने के लिए, गरीबी, बेरोजगारी तथा अकाल को पलटने के लिए, हमारे देश पर जागृति की अग्नि लानी होगी। कई भक्त जनों ने इस जागृति के लिए प्रार्थना की है।

जब आप जैसे युवा इस देश की जागृति के लिए प्रार्थना करने लगेंगे, तो यह देश धन्य हो जाएगा और अर्थव्यवस्था खिल उठेगी और समृद्ध होगी।

Petra

पतरस के साथ एक यात्रा ...

आशा है कि आपको पिछले महीनों के लेखों में पतरस के साथ लंबी पद यात्रा और जलयात्रा में मज़ा आया होगा। इस संस्करण में आएं हम पतरस के साथ यीशु की शिक्षाओं तथा उनकी गहराइयों पर चर्चा करने के लिए समय निकालें।

क्षमा याचना का रिवाज

यीशु का ज्ञान समुद्र के समान विशाल है। एक मछुआरा होने के नाते, जो समुद्र के सबसे गहरे हिस्सों से मछली पकड़ने के साथ-साथ मोती भी प्राप्त कर पाता है, पतरस अपने प्रश्न कौशल के माध्यम से यीशु से अविश्वसनीय ज्ञान प्राप्त करता है। मत्ती 18:21 में, पतरस यीशु से पूछता है, उसे अपने गलती करने वाले भाई को कितनी बार क्षमा करना चाहिए। वह इसमें यह भी जोड़ता है कि क्या उसे सात बार क्षमा करना चाहिए, लेकिन यीशु कहते हैं सात बार का सत्तर गुना। सत्तर गुना का मतलब 7x70=490 बार नहीं है। बाइबल के विशेषज्ञों का कहना है कि यह 70 की शक्ति का 7 है= 7x7x7x7x....70 गुना। इसका दूसरे शब्दों में अर्थ है अनंत बार क्षमा। अगर आपका भाई अपनी गलतियों पर पछताता है तो आपको उसे अनंत बार क्षमा करना चाहिए। आपको इसकी गिनती करने की आवश्यकता नहीं है। जिन लोगों ने यीशु को क्रूस पर लटका दिया, उन्हें न तो पछतावा हुआ और न ही उनका हृदय परिवर्तन हुआ। फिर भी, यीशु ने परमेश्वर से उन्हें क्षमा करने की विनती की और हमारे लिए उच्च मानक स्थापित किया। पतरस का यह प्रश्न अंततः उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग बन जाता है। यहां तक कि जब पतरस ने अपनी चेतना की चोभ लगते यीशु को जानने से इनकार किया, तो उसे एक बड़ा विश्वास था कि यीशु उसे क्षमा कर देंगे। लेकिन यहूदा ने दोष को अपने ऊपर हावी होने दिया और पश्चाताप करना भूल गया। अंततः वह फांसी लगाकर मर गया।

हमें इससे क्या मिलता है?

मत्ती 4:20 में, यह कहा गया है कि पतरस यीशु के पीछे चलने के उनके निमंत्रण पर सहमत हो गया और उसने एक मछुआरे के रूप में अपना काम छोड़ दिया। हालाँकि अन्य शिष्यों ने भी अपना काम छोड़कर यीशु का अनुसरण किया, फिर भी उनमें से किसी ने भी यह सवाल नहीं किया, “हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं तो हमें क्या मिलेगा?” (मत्ती 19:27)। इसके माध्यम से हमें हर बात के लिए स्पष्टीकरण माँगने के उनके साहस, उनके ज्ञान और एक दर्शन खोजने की उत्सुकता का पता चलता है। स्वर्ग में अनन्त जीवन में, जब यीशु अपने सिंहासन पर विराजमान होंगे, तो बारह चेले इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करेंगे। यह एक ऐसा सम्मान है जो उनके जीवन में किसी अन्य पुरुष को नहीं मिला है। यीशु ने यह भी कहा कि जब कोई यीशु की महिमा के लिए कुछ खोता है, तो उसे सौ गुना आशीषें मिलेंगी (मत्ती 19:27-29)। जब इस जगत के लोग धनी व शक्तिशाली लोगों का अनुसरण करते हैं, तो वे थोड़े समय के लिए ही खुश रह सकते हैं। परन्तु यदि वे यीशु का अनुसरण करते हैं, तो वे जीवन भर आशीषित रहेंगे और स्वर्ग में एक अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। पतरस ने सही प्रश्न पूछकर यह सच्चाइयाँ इस जगत और चेलों को दीं।

मैं ठोकर नहीं खाऊंगा

एक रात यीशु ने जैतून के पहाड़ पर अपने शिष्यों से कहा कि वे उसके कारण ठोकर खाएंगे। जबकि हर कोई सदमे में खामोश रहता है, पतरस तुरंत कहता है कि, “यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएँ तो खाएँ, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊँगा” (मत्ती 26:33)। यहाँ हम देख सकते हैं कि पतरस दूसरों से तुलना करके खुद के बारे में शेखी बघारता है। उसने यह भी कहा कि यदि उसे मरना भी पड़े, तो भी वह यीशु को नहीं छोड़ेगा। यदि आप ध्यान दें, तो यीशु ने यह नहीं पूछा था, “क्या तुम मेरे साथ मरोगे?” जब शब्द अधिक होते हैं तो उसका अंत हमेशा पाप होता है। पतरस ने अपनी बातों से अपना फंदा खुद ही खोदा।

गतसमनी में पतरस

यीशु की आत्मा मृत्यु का भार सह रही थी। चूँकि वह जानते थे कि क्रूस पर उन्हें अपमान, चोट और दर्द का सामना करना पड़ेगा, उनका हृदय काँप गया। जब कोई अत्यधिक तनाव से गुजरता है, तो कहा जाता है कि उसकी रक्त वाहिकाएं टूट जाती हैं। यीशु भी ऐसी ही स्थिति से गुजरे और पसीने के साथ खून बहने लगा। उन्हें उम्मीद थी कि उनके शिष्य पतरस, यूहन्ना व याकूब इसे समझ पाएंगे कि उन पर क्या बीत रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात, उनका हृदय चाहता था कि पतरस जागता रहे और उनके लिए कम से कम एक घंटे तक प्रार्थना करे। लेकिन पतरस ने यीशु की भावनाओं को नहीं देखा। वह एक बच्चे की तरह सो रहा था, जिसे यह पता नहीं था कि आगे क्या होने वाला है। गतसमनी यीशु के लिए एक भयानक अनुभव था। लेकिन पतरस के लिए वह उसके सोने का स्थान था। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भले ही पतरस यीशु के साथ यात्रा कर रहा था, उसका हृदय उनसे दूर रहा।

(पतरस के साथ यात्रा अगले संस्करण में और दिलचस्प घटनाओं के साथ जारी रहेगी)

प्रार्थना गाइड

मई 2022

1 आएं हम इस गर्मी में सूर्य से गर्मी के प्रभाव को कम करने के लिए प्रार्थना करें क्योंकि इन दिनों बहुत गर्मी है।

2 पारा बढ़ने के कारण झीलें सूख रही हैं। आएं हम प्रार्थना करें कि गर्मियों में पीने के लिए पर्याप्त पानी हो।

3 आएं हम गर्मी के कारण कृषि भूमि के घटाव को रोकने तथा किसानों की बेहतरी के लिए प्रार्थना करें।

4 आएं हम सभी के गर्मी की बीमारियों से बचाव के लिए प्रार्थना करें।

5 आएं हम अपने देश को पानी की कमी से बचाने के लिए पर्याप्त बारिश की प्रार्थना करें।

6 आएं हम इस गर्मी के दौरान भारत के सभी राज्यों में निर्बाध बिजली के लिए प्रार्थना करें।

7 आएं हम इस गर्मी के दौरान बच्चों एवं बुजुर्गों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करें।

8 श्रीलंका आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। आएं हम इसके आर्थिक सुधार के लिए प्रार्थना करें।

9 आएं हम श्रीलंका के लोगों के लिए खाद्य उत्पादों, ईंधन व दवाओं की पर्याप्त उपलब्धता के लिए प्रार्थना करें।

10 आएं हम श्रीलंका में भुखमरी से होने वाली मौतों की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

11 आएं हम प्रार्थना करें कि अन्य देश आवश्यक आपूर्ति और भोजन उपलब्ध कराने में श्रीलंका की मदद के लिए आगे आएं।

12 आएं हम श्रीलंका के आर्थिक विकास व कल्याण के लिए प्रार्थना करें और इस आर्थिक संकट के माध्यम से उस देश को घटाने वाली दुष्ट आत्मा के विरुद्ध प्रार्थना करें।

13 आएं हम प्रार्थना करें कि सरकार द्वारा ऐसे अच्छे नीतिगत निर्णय लिए जाएं जो लोगों को महँगाई से और विरोध प्रदर्शनों से होती हिंसा के दुष्प्रभावों से बचाएं।

14 आएं हम श्रीलंका में परमेश्वर के शासन एवं जागृति तथा श्रीलंकाई तमिल लोगों और सिंहली लोगों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

15 आएं हम प्रार्थना करें कि रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध समाप्त हो और यूक्रेन में शांति हो।

16 रूस के राष्ट्रपति पुतिन के ऊपर परमेश्वर का शासन होने तथा प्रभु से उनके हृदय को बदलने के लिए प्रार्थना करें।

17 दोनों देशों में लोग युद्ध से पीड़ित हैं और मर रहे हैं। आएं हम प्रार्थना करें कि यह देश बचाए जाएं और अन्य कोई मौतें न हों।

18 आएं प्रार्थना करें कि यूक्रेन के लोगों में तनाव की स्थिति बदले और शान्ति फैले।

19 भारत में 40 करोड़ किशोर हैं जो 15 से 29 की आयु के बीच हैं। आएं इन किशोरों के उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

20 बहुत सी युवतियाँ नौकरी न होने से पैसे कमाने के लिए ऐसे काम कर जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते, अपना कुंआरीपन खो रही हैं। आएं प्रार्थना करें कि यह युवतियाँ बचाई जाएं और उनके हालात बदलें।

21 आएं हम उन किशोरों के पाप से छुटकारे के लिए प्रार्थना करें जो समलैंकिगता के पाप में फँसे हैं।

22 आएं हम शराब के आदी हुए युवाओं के इस पापमय लत से छुटकारे के लिए और शराब की दुकानों के उखाड़े जाने के लिए प्रार्थना करें।

23 विश्व स्तर पर, प्रत्येक मिनट भुखमरी 11 लोगों को मार रही है। आएं हम भुखमरी की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

24 वर्ष 2021 में वैश्विक स्तर पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार, 15.5 करोड़ लोग प्रभावित हुए हैं। आएं हम प्रार्थना करें कि ये कमजोरियां हमारे देश को छोड़ दें।

25 वैश्विक स्तर पर खाद्य कीमतों में 40% की वृद्धि ने लोगों को भूखे मरने के लिए छोड़ दिया है। आएं प्रार्थना करें कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था खिलने लगे।

26 लाखों लोग दिन में कम से कम एक बार बिना भोजन के बिस्तर पर सोते हैं। आएं हम प्रार्थना करें कि यह बंद हो और मुफ्त में भोजन उपलब्ध कराया जाए।

27 आएं हम उन दुष्ट आत्माओं के विनाश के लिए प्रार्थना करें जो कलीसियाओं और पासबानों के विरुद्ध उठती हैं।

28 आएं हम कलीसियाओं के बीच विभाजन की आत्मा के विरुद्ध प्रार्थना करें और प्रार्थना करें कि कलीसियाओं पर प्रार्थना की आत्मा उंडेली जाए।

29 आएं हम प्रार्थना करें कि झूठे उपदेशकों की पहचान की जाए जो झूठी शिक्षाओं को मण्डली में और विश्वासियों के बीच लाते हैं।

30 आएं हम किशोरों एवं युवाओं पर जागृति की अग्नि उँडेल दिए जाने के लिए प्रार्थना करें। किशोर और युवा वच्चे उन लोगों के रूप में उठें जो पूरे देश में जागृति की आग फैलाएं।

31 हम उन अद्भुत चिन्हों के लिए जो प्राचीन प्रेरितों के दिनों में हुए प्रार्थना करें कि वे आज की युवा पीढ़ी के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ्य से किए जाएं।

RED ALERT

इस चेतावनी की घंटी श्रृंखला के माध्यम से हम हर महीने इस बात पर मनन कर रहे हैं कि कैसे परमेश्वर के चुने हुए लोगों ने अपनी छोटी गलतियों, अवज्ञा और परमेश्वर की बुलाहट से दूर होने के कारण तबाही का सामना किया। पिछले महीने हमने गेहजी पर मनन किया। इस महीने हम दाऊद के पुत्र अबशालोम पर ध्यान करने जा रहे हैं, जिसने परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त दाऊद के विरुद्ध कार्य किया। हम बाइबल में अबशालोम के बारे में इस प्रकार पढ़ते हैं, "समस्त इस्राएल में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था; वरन् उसमें नख से सिख तक कुछ दोष न था।" (2शमूएल 14:25)। इतना ही नहीं उसमें अपनी बातों से लोगों को आकर्षित करने की योग्यता थी। लेकिन देश पर शासन करने की योग्यता और सभी लोगों द्वारा प्रशंसा किए जाने के बावजूद, परिणाम दयनीय था। यह दयनीय परिणाम क्या था? इसके पीछे क्या कारण था? आएं पता करते हैं!

अबशालोम का परमेश्वर से कोई संबंध नहीं था

जब हम बाइबल में अबशालोम के बारे में पढ़ते हैं, तो इसका कोई उल्लेख नहीं है कि उसने परमेश्वर को खोजा या परमेश्वर की आराधना की। हालाँकि उसके पिता दाऊद ने सुंदर, होशियार, वाद्य यंत्र बजाने वाला और जंगली जानवरों को मारने के लिए साहसी होते हुए भी, हमेशा हर स्थिति में परमेश्वर का मार्गदर्शन खोजा और इसलिए वह इस्राएल के राजा बना। परन्तु अबशालोम ने दाऊद के विपरीत ऐसा काम किया जो उसे भाता था। इसलिए उसका कौशल और प्रतिभा किसी के काम नहीं आई और उसने खुद को बर्बाद कर लिया। प्रिय युवाओं, परमेश्वर ने आपको कई प्रतिभाएं दी होंगी। लेकिन, यदि हमारा परमेश्वर के साथ संबंध नहीं है, तो यह बेकार होगा। हम यूहन्ना 15:4 में पढ़ते हैं, "जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।"

परमेश्वर का कोई भय नहीं

जब शाऊल ने दाऊद को मारने का यत्न किया, तब शाऊल को तीन बार दाऊद के हाथ पकड़वाया गया। यदि दाऊद ऐसा सोचता तो शाऊल को मार सकता था। परन्तु दाऊद यहोवा का भय मानकर शाऊल को जाने दिया, यह सोचकर कि वह परमेश्वर के अभिषिक्त को कैसे मार सकता है।

परन्तु अबशालोम दाऊद को मारने के लिए महत्वाकांक्षी था और उसने सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया और अपनी सेना भेज दी। परन्तु दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा और प्रतिज्ञा के कारण, परमेश्वर ने दाऊद को अबशालोम से बचाया। हम भी वह करने की हिम्मत न करें जो परमेश्वर नहीं चाहता कि हम परमेश्वर के भय के बिना करें। इसलिए हमें बहुत नुकसान और क्षति का सामना करना पड़ता है। "यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच जाते हैं।" (नीतिवचन 14:27)

अधीर

जब परमेश्वर ने हर इंसान को बनाया, तो परमेश्वर ने उसे एक विशिष्टता दी और एक उद्देश्य रखा। लेकिन इसे पूरा होने में कुछ समय लगता है।

अबशालोम के लिए भी, परमेश्वर के पास एक विशिष्टता और उद्देश्य हो सकता था। परन्तु अबशालोम ने उसे देखे बिना, दाऊद के सिंहासन के लिए लालसा की, गलत सलाह सुनी और सिंहासन पर कब्ज़ा करने के लिए गलत तरीके की तलाश की। क्या इतने प्रयास के बाद उसकी इच्छा पूरी हुई? नहीं, वह एक बड़े बांज वृक्ष पर फँस गया और योआब द्वारा मारा गया।

प्रिय युवाओं, परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक विशिष्ट प्रतिभा और कौशल दिया है। लेकिन हम दूसरों की नकल करने और उनके जैसा बनने की कोशिश करते हैं, जब हम ऐसा करने में असफल होते हैं, तो हम थक जाते हैं या दूसरों से ईर्ष्या करते हैं। इसके बजाय, यदि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और अपनी प्रतिभा के साथ आगे बढ़ते हुए उससे डरते हैं, तो हम निश्चित रूप से इस जागृति के समय में चमक सकते हैं।

"हे नवयुवकों, तुम भी वृद्ध पुरुषों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।" इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।" (1पतरस 5:5,6)

आएं हम अगली चेतावनी की घंटी श्रृंखला में फिर से सीखने को तैयार रहें।